INDEX

Subject: ज्ञान एवं पाठ्यक्रम

Name :

Class & Sec. B.Ed.

S. No.	Date	Particulars	Page No.	T. Sign. & Remarks
1.		स्वामी विवेकानन्द	1-23	

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

SMT. SHYAMADEVI
Degree College of Science & Management

स्वामी विवेकानन्द

जीवन-परिचय :- देश के राजनीतिक चेतना के साथ-साथ सांस्कृतिक तथा धार्मिक भावनाओं के विकास में अपना बलिष्ठ कन्धा लगाने वालों में स्वामी विवेकानन्द का नाम विशेषरूप से स्मरणीय है।

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी सन् 1863 ई० को पौष संक्रान्ति को बंगाल प्रान्त के कलकत्ता के सिमुलिया पल्ली में प्रसिद्ध वकील विश्वनाथ दत्त के घर में सूर्योदय के कुछ क्षण पूर्व 6 बजकर 50 मिनट पर हुआ था।

वीरेश्वर शिव की भक्ति से पुत्र प्राप्त होने के कारण माता ने इस का नाम वीरेश्वर रखा। प्यार से उन्हें घर में बिले के नाम से पुकारा जाता था। नामकरण के समय उन का नाम नरेन्द्रनाथ रखा गया। बचपन में नरेन्द्र बहुत ही चन्चल थे। उछल कूद और गुल का अन्त न था। उन की देखभाल के लिये दो नौकरानियाँ रखी गई थी। नरेन्द्रनाथ की स्मरण शक्ति अत्यन्त प्रखर थी सात वर्ष की अवस्था में कृत्तिवास की बंगला रामायण उन्हें कण्ठस्थ थी।

प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण- सन् 1879 में प्रथम श्रेणी में प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण कर नरेन्द्र प्रेसीडेन्सी कालेज में प्रविष्ट हो गये। किन्तु एक वर्ष बाद एक जनरल एसेम्बली कालेज में चले गये। नरेन्द्र ने अंग्रेजी तथा बंगला का अच्छा

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

अध्ययन किया।

विद्यार्थी जीवन में नरेन्द्र का व्यक्तित्व :-

नरेन्द्र अपने व्यक्तित्व के कारण सब के प्रिय बन गये। चोरनाईन विद्यार्थी उन से भयभीत रहा करते थे। वे किसी को भी दुर्व्यवहार करते, देख उस का घोर विरोध करते थे। व्यायाम करते, क्रिकेट में उन्हें खीच थी। विलासी छात्रों की वे अलोचना करते थे।

माँ भारती के अमर पुत्र :-

माँ भारती के ये अमर पुत्र अपने पुर्वजों की थाती संभाल, अतीत का ज्योति कलश ले, साधना के पथ पर बढ़े तो पथ की छोड़ता उस का अन्धकार सब कुछ स्वयमेव नष्ट हो गया। सौजन्य, आरती लिए स्वागत में खड़ी मिली। उन का जीवन आज भी सर्वोच्च के सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचकर वह ज्ञान-ज्योति बिखेर रहा है जिस के प्रकाश पर संसार सब-कुछ न्योछावर करने को सन्नद्ध है।

"जिन के पवित्र तेज के कारण समस्त अमानवीय एवं अपावन विचारों ने घुटने टेक दिए।"

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

विलक्षण पुरुष :- स्वामी विवेकानन्द जैसे विलक्षण पुरुष भारत में एक दो ही हुए हैं। इन को एक विशाल मालिका है। इस दिव्य मालिका के एक ज्योतिर्मान रत्न है - स्वामी विवेकानन्द जी।

नरेन्द्र का हृदय भाव :- नरेन्द्रनाथ का हृदय धर्म भाव से परिपूर्ण था। सत्य प्राप्ति के लाभ की इच्छा से वे ब्रह्म समाज में जाने लगे।

जाति वैषम्य, अस्पृश्यता और भेदभाव -

जाति वैषम्य, अस्पृश्यता और भेदभाव से दुखी हिन्दू जनता धर्म का परिवर्तन करती जा रही थी. स्वामी विवेकानन्द ने जातिवाद और वैषम्यवाद की विचार धाराओं को समाज में से जड़ से उखाड़ फेंकने का सफल प्रयत्न किया। सब बातों के अतिरिक्त देश की स्वतन्त्रता के महान उद्धारकों में भी विवेकानन्द का प्रमुख स्थान है।

स्वामी विवेकानन्द का विवाह -

बी. ए. परीक्षा की समाप्ति होने पर उनके एक धनी पिता की पुत्री के साथ नरेन्द्र का विवाह निश्चित कर दिया। नरेन्द्र विवाह न करने का निश्चय कर चुके थे, अतः उन्होंने इस का विरोध किया।

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

अकस्मात् विश्वनाथ जी परलोक सिधार गये। जिस से विवाद का प्रसंग समाप्त हो गया।

कष्टप्रद जीवन – विश्वनाथ जी बहुत धन कमाते थे, लेकिन वे कुछ नही छोड़ गये। अतः भाई, बहनो एवं माँ का भरण-पोषण नरेन्द्रनाथ के लिये कठिन हो गया था। आर्थिक स्थिति बहुत बिगड़ गयी, लेकिन नरेन्द्रनाथ ने किसी से चूं तक न की। उन्होंने मित्रों की आर्थिक सहायता को अस्वीकार कर दिया। सुख की गोद मे पले नरेन्द्रनाथ दरिद्रता की चरम सीमा पर पहुंच गए। फटा जूता पहनकर एक चादर से बदन ढक कर इधर-उधर घूमते रहते थे।

नरेन्द्र का सन्यास – सन् 1887 में नरेन्द्रनाथ ने सन्यास ग्रहण कर लिया।

"धर्म शास्त्र, विज्ञान, इतिहास आदि विषयों की आलोचना करके नरेन्द्र ने अपने मित्रों को पारगत बना दिया।"

नरेन्द्रनाथ के मधुर कण्ठ से भजन सुनकर उन के गुरु भाई हरि प्रेम मे मगन होकर नाचने लगते थे।

सन् 1888 ई० मे नरेन्द्र परिव्राजक के रूप में भ्रमण के लिए निकल पड़े। काशी, अयोध्या, लखनऊ, आगरा होकर पैदल वृन्दावन गए। वे जहा भी जाते वहाँ लोग

उनके तेजोमय रूप को देखकर आकृष्ट हो जाते थे।

अब उन्होंने अकेले घूमना शुरू कर दिया। सन् 1893 में ये विश्व भ्रमण पर निकल पड़े।

धर्म सम्मेलन — अमेरिका के शिकागो नगर में सर्व धर्म सम्मेलन हुआ। वहाँ पर रोमन कैथोलिक ईसाइयों ने अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिये इस धर्म सभा का आयोजन किया। इस में संसार के सभी प्रमुख धर्मों के प्रतिनिधियों को बुलाया गया। मद्रास के नवयुवक स्वामीजी की प्रतिभा से मुग्ध होकर उन से हिन्दू धर्म के प्रतिनिधि के रूप में अमेरिका जाने का अनुरोध किया। स्वामीजी अमेरिका गए और धर्म सभा में सम्मिलित हुए।

तथा उन्होंने अपने तेज और ज्ञान से जनता को प्रभावित किया।

हिन्दू धर्म की विजय पताका —

स्वामीजी ने वहाँ पर अपना भाषण अमेरिकावासी भाइयों व बहनों कहकर शुरू किया। इन शब्दों को सुनकर आठ हजार लोग ताली बजाकर आनन्द ध्वनि करने लगे। स्वामीजी के भाषण से पाश्चात्य जगत के लोगो के हृदय में प्रथम बार मानव जाति के एकत्व की अनुभूति उत्पन्न हुई।

इन के भाषण से हिन्दू धर्म की

SMT SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

विजय पताका पाश्चात्य देशों में फहराने लगी। स्वामी जी के आदर्शों से प्रभावित होकर अनेक शिक्षित लोग उनके कार्य में सहायता करने के लिए सन्यासी हो गए। गर्वीले अमेरिकावासी पागलों की भाँति स्वामीजी के पीछे-पीछे घूम रहे थे। सारा अमेरिका उन के चरणों में लोट गया। उन्होंने युवकों को सन्देश दिया कि हमें मातृ-भूमि की पूजा करनी चाहिये। इसी प्रकार स्वामीजी विजयी वीर की तरह उन पर अपना प्रभाव छोड़ते जा रहे थे।

स्वामी विवेकानन्द द्वारा रचित ग्रन्थ—

1. ज्ञानयोग
2. राजयोग
3. प्रेम योग
4. कर्मयोग
5. भक्तियोग।
6. ज्ञानयोग का प्रवचन
7. सरल राजयोग
8. धर्म विज्ञान
9. धर्मतत्व
10. धर्म रहस्य
11. हिन्दू धर्म
12. हिन्दू धर्म के पक्ष में
13. शिकागो वक्तृता
14. मरणोत्तर जीवन
15. भगवान श्री कृष्ण और भगवद्गीता
16. देववाणी (उच्च आध्यात्मिक उपदेश)

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

17. कवितावली
18. वेदान्त
19. व्यावहारिक जीवन में वेदान्त
20. आत्मतत्व
21. आत्मानुभूति तथा उस के मार्ग
22. विवेकानन्द जी के संग में
23. स्वामी विवेकानन्द जी से वार्तालाप
24. विवेकानन्द जी के सान्निध्य में
25. पत्रावली
26. भारत में विवेकानन्द
27. विवेकानन्द संचयन

स्वामीजी का विपुल साहित्य उन की जन्म शताब्दी के अवसर पर दस खण्डों में सन् 1963 में प्रकाशित हुआ था। इन दस खण्डों में उन के द्वारा लिखित पुस्तकें, लेख, पत्र उन के व्याख्यान, वार्तालाप और उन की काव्य-रचनाएं संकलित हैं।

इस प्रकार उन का साहित्य लगभग चार हजार पृष्ठों में है।

इस के अतिरिक्त छोटी-बड़ी पुस्तकें भी स्वामी विवेकानन्द के नाम से उपलब्ध हैं।

जीवन-दर्शन

जीवन-दर्शन भारतीय दर्शन की वेदान्त शाखा से अभिप्रेरित है। रामकृष्ण परमहंस के मुख्य शिष्य के नाते उन्होंने अपने जीवन में किसी प्रकार की संकुचित भावना को स्थान नहीं

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

दिया। वे मानवमात्र में ईश्वर की उपस्थिति मानते थे। वेदान्त-दर्शन आत्मतत्व पर विशेष बल देता है। अपने एक व्याख्यान में स्वामीजी ने कहा था- "जब हम दर्शन का अध्ययन करते हैं, तब हमें यह ज्ञान होता है, कि सम्पूर्ण विश्व एक है। आध्यात्मिक, भौतिक, मानसिक तथा प्राण-जगत ये भिन्न-भिन्न नहीं हैं। समस्त विश्व शुरू से यहां तक एक है, बात इतनी ही है, कि अलग-अलग दृष्टिकोण से देखे जाने के कारण वह विभिन्न प्रतीत होता है।"

वेदान्त-दर्शन - आत्मा शाश्वत और सर्वव्यापी है। सम्पूर्ण विश्व में एक चैतन्य सत्ता व्यक्त है। जिस के सन्दर्भ में स्वामीजी की निम्नलिखित शक्तियां और सुभाषित उल्लेखनीय हैं :-

1. जब तुम अपने आप को शरीर समझते हो, तब तुम विश्व से अलग हो, जब तुम अपने आपको जीव समझते हो,
तब तुम अनन्त अग्नि के स्फुलिंग हो,
जब तुम अपने आप को आत्मस्वरूप मानते हो, तभी तुम विश्व हो।

2. विश्व है परमात्मा का व्यक्त रूप।

3. ईश्वर की परिभाषा करना चर्वित चर्वण है,

SMT. SHIVA DEVI Degree College of Science & Management

एकमात्र परम अस्तित्व, जिसे हम जानते हैं, वही है।

4. ईश्वर मनुष्य बना, मनुष्य भी फिर से ईश्वर बनेगा।

5. मनुष्य न तो कभी मरता है, न कभी जन्म लेता है। शरीर मरते हैं, पर वह कभी नहीं मरता।

6. विश्व में केवल एक आत्मतत्व है, सब कुछ केवल उस की अभिव्यक्तियाँ हैं।

शिक्षा का स्वरूप — स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया है। यूरोप के महत्व को अनेक नगरों का भ्रमण करते हुए उन्हें शिक्षा की भौतिक उपलब्धियाँ भी दिखाई पड़ीं। भारत की निर्धनता का एक कारण उन्होंने अशिक्षा को माना।

स्वामी जी के अनुसार शिक्षा को मात्र सूचना तक नहीं सीमित करना चाहिए। तमाम असम्बद्ध जानकारियों को मस्तिष्क में ठूँस देने से कोई लाभ नहीं, सूचना का अपने में कोई महत्व नहीं है। जो विचार जीवन-निर्माण में सहायक हों उन को अनुभूति करना आवश्यक है। व्यक्ति में ज्ञान स्वतः निहित है। ज्ञान स्वयं सिद्ध है। जन्म के समय बालक में ज्ञानराशि स्वतः निहित है। ज्ञान बाहर से नहीं आता, वह तो अन्दर ही है।

SMT SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

मानव निर्माण शिक्षा :- लौकिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार का

ज्ञान मानव-मन में निहित रहता है। यह प्रायः ढका रहता है। जब धीरे-धीरे आवरण हटता है तो कहा जाता है, व्यक्ति सीख रहता है। जिस के मन से आवरण पूर्णतः हट जाता है। उसे सर्वज्ञ कहा जाता है। मन में ज्ञान ऐसे ही निहित है। जैसे- चकमक पत्थर में चिनगारी।

आत्मा से ही सारा ज्ञान उद्‌भूत होता है। ज्ञान या दिव्य ज्योति इस प्रकार ढकी रहती है। जैसे - लोहे की सन्दूक में बन्द दीपक। पवित्रता एवं त्याग भावना से आवरण हटता है, और अवरोधक समाप्त होता है।

शिक्षा के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द का निम्नलिखित विचार उल्लेखनीय है।

"तुम किसी बालक को शिक्षा देने में उसी प्रकार असमर्थ हो, जैसे कि किसी पौधे को बगान में पौधा अपना विकास अपने आप होकर लेता है। बालक भी अपने आपको शिक्षित करता है।

शिक्षक ऐसा समझकर कि वह शिक्षा दे रहा है, सब कार्य बिगाड़ डालता है। समस्त ज्ञान मनुष्य के अन्तर में अव्यवस्थित है, उसे केवल जाग्रत, केवल प्रबोधन की आवश्यकता है और बस इतना ही शिक्षक का कार्य है। हमें बालकों के लिए इतना

SMT SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

ही करना है, कि वे अपने हाथ, पैर, कान और आँखों के उचित उपयोग के लिए अपनी बुद्धि का प्रयोग करना सीखें।"

शिक्षा का अर्थ एवं उद्देश्य - मन में समस्त झुकावों और सभी प्रकार की प्रवृत्तियों का समन्वय चरित्र है। सुख-दुःख दोनों का चरित्र ही दृष्टि से महत्व है। कभी कभी दुःख अधिक सबल शिक्षक होता है। भलाई बुराई में जुदाई से कभी-कभी अधिक शिक्षा मिलती है।

चरित्र-गठन के लिए महान कार्यों का महत्व नहीं है बल्कि बहुत छोटे-छोटे कार्यों का भी महत्व है। अतः चरित्र गठन अच्छा तब कहा जायेगा जब व्यक्ति सदा सभी दशाओं में महान कार्य करता रहता है।

बालक को इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए। जिस से उस का चरित्र बने बुद्धि का विकास हो, मानसिक शक्ति बढ़े और वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

हमारी शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का निर्माण करना होना चाहिए। सारी शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य मनुष्य का विकास करना है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना नहीं होना चाहिए।

शिक्षा द्वारा छात्रों में श्रद्धा की निष्पत्ति होनी चाहिये। स्वामीजी श्रद्धा को बहुत महत्व देते है और भारतीय श्रद्धा के अभाव से ही दुःखी थे।

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

आत्मज्ञान द्वारा व्यक्ति में श्रद्धा उत्पन्न होती है। आत्मज्ञान से तात्पर्य बाह्य आडम्बरपूर्ण जीवन बिताना नहीं है।
केश, कमण्डल, दण्ड से कोई आत्मज्ञानी नहीं बन जाता।
तात्पर्य है अपनी अन्तर्निहित सुप्त शक्तियों का ज्ञान प्राप्त करना। इस के लिये स्वयं पर दृढ़ विश्वास रखना आवश्यक है।

पाठ्यक्रम — पाठ्यक्रम ऐसा हो जिस में निषेधात्मकता न हो। हमें छात्रों के समक्ष विधायक या भावात्मक विचार रखने चाहिए, न कि अभावात्मक या निषेधात्मक।
देश को सफल बनाने के लिए जिन-जिन विषयों को पढ़ाने की आवश्यकता हो, वे विषय अवश्य पढ़ाए जाए। श्री राम-चन्द्र, श्री कृष्ण, महावीर हनुमान आदि के जीवन चरित्र का अध्ययन करना है। ऐसी बाते पढ़नी है, जिन से छात्रों में प्रबल शक्ति का संचार हो।
धार्मिक शिक्षा भी देनी है, किन्तु आडम्बर से दूर रहना है, धर्म का क्रियात्मक अनुभव होना आवश्यक है।
विद्यालयों में किसी मत या सम्प्रदाय की शिक्षा न देकर सभी धर्मो के सारभूत तत्वों की जानकारी दी जानी चाहिये।
पाठ्यक्रम में सत्य का समावेश होना चाहिए। सत्य आत्मा का स्वभाव है। शरीर,

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

बुद्धि या आत्मा को कमजोर बनाने वाला तत्व सत्य नहीं होता, वह सत्य में जीवन - शक्ति होती है, वह बलप्रद, पवित्र और ज्ञानस्वरूप होता है।

उपनिषदों का अध्ययन भी महत्वपूर्ण है। इन में सत्य की स्थापना हुई है।

पाठ्यक्रम में शारीरिक प्रशिक्षण का भी महत्वपूर्ण स्थान है। शारीरिक दुर्बलता हमारे दुःखों का महत्वपूर्ण कारण है।

स्वामीजी के शब्दों में - "अतीत में जो हुआ। वह हम ग्रहण करेंगे। वर्तमान ज्ञान -ज्योति का उपभोग करेंगे और भविष्य में आने वाली बातों को ग्रहण करने के लिए हृदय के सारे दरवाजों को खुला रखेंगे।

अतीत के ऋषियों को प्रणाम, वर्तमान के महापुरुषों को प्रणाम और जो जो भविष्य में आएंगे, उन सबको प्रणाम।"

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

बुद्धि या आत्मा को कमजोर बनाने वाला तत्त्व सत्य नहीं होता, वह सत्य में जीवन-शक्ति होती है, वह बलप्रद, पवित्र और ज्ञानस्वरूप होता है।

उपनिषदों का अध्ययन भी महत्वपूर्ण है। इन में सत्य की स्थापना हुई है।

पाठ्यक्रम में शारीरिक प्रशिक्षण का भी महत्वपूर्ण स्थान है। शारीरिक दुर्बलता हमारे दुःखों का महत्वपूर्ण कारण है।

स्वामीजी के शब्दों में — "अतीत में जो हुआ। वह हम ग्रहण करेंगे। वर्तमान ज्ञान-ज्योति का उपभोग करेंगे और भविष्य में आने वाली बातों को ग्रहण करने के लिए हृदय के सारे दरवाजों को खुला रखेंगे।

अतीत के ऋषियों को प्रणाम, वर्तमान के महापुरुषों को प्रणाम और जो जो भविष्य में आएंगे, उन सबको प्रणाम।"

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

शिक्षण विधि — स्वामी विवेकानन्द की तत्कालीन शिक्षण-विधि में कोई आस्था नहीं थी। उन के अनुसार ज्ञान की प्राप्ति का केवल एक ही मार्ग है और वह है एकाग्रता। मन की एकाग्रता द्वारा ही शिक्षण हो सकता है किसी अन्य विधि द्वारा नहीं। शैक्षिक उपलब्धियाँ एकाग्रता की मात्रा पर निर्भर है। एकाग्रता जितनी अधिक होगी-ज्ञान भी उतना ही अधिक प्राप्त होगा।

मनुष्य और पशु में भेद ही एकाग्रता को लेकर है। पशु में यह शक्ति कम होती है, मनुष्य में अधिक। निम्नतर मनुष्य में यह शक्ति कम होती है और उच्चतम पुरुष में अधिक. मनुष्यों में भेद इसी शक्ति के आधार पर है।

एकाग्रता की शक्ति प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य आवश्यक है। ब्रह्मचर्य से बौद्धिक एवं आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है।

ब्रह्मचर्य से स्मृति-शक्ति का विकास होता है, प्रबल कार्य-शक्ति प्राप्त होती है, अमोघ इच्छा शक्ति का विकास होता है, मानव जाति पर अद्भुत प्रभुता मिल जाती है, और पवित्रता का भाव जाग्रत होता है। अतः बालकों को ब्रह्मचर्य का अभ्यास करना चाहिए।

SMT. SHYAM DEVI Degree College of Science & Management

शिक्षक एवं शिष्य

स्वामीजी के अनुसार शिक्षा 'गुरु-गृह वास' है। शिक्षक के व्यक्तिगत जीवन के बिना शिक्षा नहीं हो सकती। शिक्षक का चरित्र अग्नि के समान प्रकाशमान हो। उसे उच्चतम आदर्शों की सजीव मूर्ति होना है। उसे ज्ञान के दान के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए। शिक्षक को छात्र के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए। शिष्य में सारी शक्ति लगा देने वाला ही सच्चा गुरु है।

स्वामीजी ने शिक्षक के तीन विशेष गुण बताए हैं :-

1. प्रथम गुण है :- उसका शास्त्र ज्ञान। सच्चा शिक्षक शास्त्रों के मर्म को जानता है वह शब्दों के पर अर्थ को जानता है।

2. दूसरा गुण है :- निष्पापता। उसे हृदय और मन से पवित्र होना चाहिए। चित्त की शुद्धता के बिना वह छात्रों में आध्यात्मिक शक्ति का संचार नहीं कर सकता।

3. तीसरा गुण है :- कि शिक्षक को धन, नाम या यश सम्बन्धी स्वार्थ के लिए धर्म-शिक्षा नहीं देनी चाहिए। अतः गुरु में त्यागभाव आवश्यक है।

SMT SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

शिक्षक में अपने शिष्यों के प्रति प्रेम होना चाहिए। स्वामीजी ने शिष्य के लिए भी कुछ आवश्यक गुण बताए हैं। शिष्य में शुद्धता, विचार, वाणी और कर्म की पवित्रता होनी चाहिए। उस में ज्ञान की पिपासा होनी चाहिए। जिज्ञासु ही वास्तविक शिष्य है। शिष्य के हृदय में, उच्च आदर्शों के लिए व्याकुलता होनी चाहिए।

शिष्य को गुरु में अटूट विश्वास होना चाहिए, गुरु के प्रति विश्वास, नम्रता विनय और श्रद्धा के बिना छात्र शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकता।

स्वामी जी कहते हैं - "जिन देशों में इस प्रकार के गुरु-शिष्य सम्बन्ध की उपेक्षा हुई है, वहां धर्मगुरु एक वक्ता मात्र रह गया है- गुरु को मतलब रहता है अपनी दक्षिणा से और शिष्य को मतलब रहता है गुरु के शब्दों से जिन्हें वह अपने मस्तिष्क में ठूंस लेना चाहता है। अपने गुरु की पूजा ईश्वर होकर से करो, पर उनकी आज्ञा का पालन आँखें मूंदकर न करो। प्रेम तो उन पर पूर्ण करो," परन्तु स्वयं भी स्वतन्त्र रूप से विचार करो

SMT SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

शिक्षक

स्वामी जी का कथन है- "वास्तव में किसी को किसी के द्वारा कभी शिक्षा नहीं दी गयी है। हम में से प्रत्येक को अपने आपको शिक्षा देनी पड़ती है। बाह्य शिक्षक केवल ऐसे सुझाव देता है जिससे आत्मा कार्य करने और समझने के लिए चैतन्य हो जाती है।"

स्वामीजी द्वारा शिक्षक के अन्दर बहुत से गुणों की अपेक्षा की गई है, जो इस प्रकार है -

- शिक्षक को आध्यात्मिक दृष्टि से दिव्य व परिपक्व होना चाहिए।
- दण्ड विरोधी प्रवृत्ति का होना चाहिए।
- शिक्षक को व्यावहारिक भी होना चाहिये। जिस से वह मानव निर्माण के दायित्व को निभा सके।
- शिक्षक में त्याग, साहस उत्साह विश्वबन्धुत्व आदि गुण होने चाहिए।

शिक्षार्थी

जिन महत्वपूर्ण गुणों को स्वामीजी के अनुसार छात्र के व्यक्तित्व में समाहित करना चाहिए। वे इस प्रकार के हैं-

⇒ विद्यार्थी को शरीर एवं मन से बलवान होना चाहिए।

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

⇒ सत्य को जानने की प्रबल इच्छा होनी चाहिए।

⇒ उस के अन्दर इच्छा शक्ति व चित्त को एकाग्र रखने की क्षमता होनी चाहिए।

⇒ विद्यार्थी को विद्यार्थी विद्याप्रेमी, विवेकशील स्वप्रयत्न शील एवं कर्तव्य शील आदि होना चाहिए।

⇒ धर्म व धार्मिक क्रियाओं में आस्थावान होना चाहिए।

अनुशासन

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार अनुशासन का अर्थ है- अपने व्यवहार में आत्मा द्वारा निर्दिष्ट होना।

अनुशासन के सम्बन्ध में उन के विचार प्रकृतिवाद से मिलते- जुलते हैं। उन का कहना था कि बालक को स्वानुशासन सीखना चाहिए। उन्हे किसी प्रकार का शारीरिक दण्ड नहीं देना चाहिए तथा उन पर अनुचित दबाव भी नहीं डालना चाहिए, बल्कि उन्हे सीखने के लिए पर्याप्त स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए, उन्हे स्वानुशासन की शिक्षा दी जानी चाहिए तथा सहानुभूतिपूर्वक सीखने के लिए उत्साहित करना चाहिए।

Shri Shyama Devi Degree College of Science & Management

विद्यालय

विवेकानन्द गुरु-गृह प्रणाली के पक्षधर थे। वे यह अनुभव करते थे कि आधुनिक परिस्थितियों में विद्यालय प्रकृति की गोद में शहर के कोलाहल से दूर नहीं बसाये जा सकते। अतः आपने केवल इस बात पर बल दिया कि विद्यालय का पर्यावरण शुद्ध होना चाहिए और वहां अध्ययन-अध्यापन, खेलकूद, व्यायाम के अतिरिक्त भजन-कीर्तन एवं ध्यान की क्रियाएं भी सम्पन्न करायी जाएं।

स्त्री-शिक्षा

वास्तव में यदि गम्भीरता के साथ देखा जाए तो यही ज्ञात होता है कि भारत के पतन और अवनति का एक प्रमुख कारण स्त्रियों की अशिक्षा है।

प्रत्येक भारतीय हिन्दू को चाहिए कि अपने समस्त ज्ञान को स्त्री और पुरुष में समान रूप से वितरित करें।

प्राचीनकाल में विवाह बहुत कम आयु में ही माता-पिता कर दिया करते थे और अपने कर्त्तव्य से मुक्त हो जाते थे। बाल विवाह सदैव हानिकारक सिद्ध होते हैं, क्योंकि बाल-विवाह के कारण वर्तमान समय में अधिकांश हिन्दू परिवारों में विधवाओं की समस्या दिखाई देती है।

भारतीय नारी की पवित्रता तथा सतीत्व बहुमूल्य निधि है, जो उसे अतीत काल

SMT SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

से प्राप्त हुई है। इसीलिए वह उसे स्वभावतः समझती है।

प्रत्येक भारतीय भगवान राम और माता सीता को ही अपना आदर्श मानते है। आदर्श भारतीय जननी के गुण पवित्रता भक्ति तथा सहनशीलता है। स्त्री शक्ति की सजीव प्रतिमा है।

मनु ने कहा है- "जहाँ स्त्रियों का आदर होता है, वहाँ देवता प्रसन्न रहते है। और जहाँ उनका आदर नहीं होता वहाँ सारे कार्य और प्रयत्न निष्फल हो जाते है।"

स्त्रियों की अनेक समस्याओं का समाधान शिक्षा द्वारा ही हो सकता है। भारतीय स्त्री का आदर्श सीता का चरित्र होना चाहिए। उन्हें त्याग की शिक्षा दी जाए।

आधुनिक युग में नारियों को आत्मरक्षा के उपायों को भी सीखना चाहिए। संघमित्रा लीला, मीराबाई, झांसी की रानी के आदर्शों को अपनाकर स्त्रियों को पवित्रता निर्भयता और ईश्वरपरायणता के गुणों का अभ्यास करना चाहिए।

स्त्रियों की उन्नति से संस्कृति ज्ञान शक्ति और भक्ति का देश में जागरण हो जायेगा। स्त्रियों को शिक्षा कार्य अपने हाथ में लेना चाहिए।

स्वामी जी कहते है- "सुशिक्षित और सच्चरित्र

पत्नी; ब्रह्मचारिणियाँ, शिक्षा-कार्य का भार अपने ऊपर लें। ग्रामों और शहरों में केन्द्र खोलकर स्त्री शिक्षा के प्रचार का प्रयत्न करें। इतिहास और पुराण, गृह-व्यवस्था और कला-कौशल, गृहस्थ जीवन के कर्त्तव्य और चरित्र के गठन सिद्धान्तों की शिक्षा देनी होगी। जप, पूजा और ध्यान शिक्षा के अनिवार्य अंग होंगे। दूसरे गुणों के साथ उन्हें शूरता और वीरता के भाव भी प्राप्त करने होंगे।"

जनसमूह की शिक्षा

जनसमुदाय के प्रति स्वामीजी के हृदय में अपार स्नेह था। गरीबों की दशा देखकर उन का हृदय विदीर्ण हुआ जा रहा था।
उन का मत था, कि जब तक असंख्य मनुष्य भूख और अज्ञान में जीवन बिता रहे हैं, तब तक किसी भी व्यक्ति को चैन से नहीं बैठना चाहिए।
जनसमूह की अवहेलना करना महान पाप है।

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा पर विचार-

1. "धन्य हैं वो लोग जिन के शरीर दूसरों की सेवा करने में नष्ट हो जाते हैं।"

2. "खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

पाप है।

3. जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है, यह अग्नि का दोष नहीं है।

4. हमें ऐसी वर्तमान शिक्षा की आवश्यकता है, जो समय के अनुकूल हो।

5. हमारी दुर्दशा का मूल कारण नकारात्मक शिक्षा प्रणाली है।

6. शिक्षा का मतलब अपने दिमाग में सूचनाओं एवं जानकारियों को भरना नहीं है बल्कि जानकारियों का सही उपयोग करना ही शिक्षा है।

7. शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को व्यावहारिक बनाना है। जो शिक्षा व्यवहारिक नहीं है वह व्यर्थ है।

8. ऐसी शिक्षा की जरूरत है, जिस का अनुसरण करने से व्यक्ति अपने परिवार, समाज व देश का गौरव बढ़ा सके।

9. सच्ची शिक्षा का लक्ष्य ही मनुष्य के व्यक्तित्व व यथार्थ मानव का निर्माण करना होता है।

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

मृत्यु :- विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 को हुआ था और 4 जुलाई 1902 को मात्र 39 साल की उम्र में महासमाधि धारण कर उन्होंने प्राण त्याग दिए थे। 4 जुलाई 1902 को अपनी मौत के दिन 4 संध्या के समय बेलूर मठ में उन्होंने 3 घंटे तक योग किया। शाम के 7 बजे अपने कक्ष में जाते हुए उन्होंने किसी से भी उन्हें व्यवधान ना पहुंचाने की बात कही। और रात के 9 बजकर 10 मिनट पर उन की मृत्यु की खबर मठ में फैल गई।

19/11/21

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management